एम० ए० हिन्दी I सेमेस्टर

प्रथम पत्र

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा
M; 9204436227

प्रश्न: ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से स्वर और व्यंजन के आधारभूत भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

आधुनिक दृष्टि से स्वर और व्यंजन की परिभाषा इस प्रकार की गयी है —

निःश्वास में बिना अवरोध के हुए जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं वे स्वर कहलाती हैं। व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण करते समय निःश्वास में कहीं न कहीं अवरोध होता है। इस दृष्टि से स्वर ध्वनियों में जो भेद दिखलाई देता है उसके कई कारण हैं —

(क) जिह्वा की ऊँचाई
(ख) जिह्वा का उठा हुआ भाग
(ग) ओष्ठ की स्थिति

जिह्वा के ऊँचाई के अनुसार स्वर के चार भेद किए गए हैं —

(1) विवृत (2) अर्द्ध विवृत (3) संवृत (4) अर्द्ध संवृत।

विवृत — जब जिह्वा और मुख विवर का उपरिभाग के बीच अधिक से अधिक दूरी रहती है तो विवृत ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। जैसे - आ।

अर्द्ध विवृत — अर्द्ध विवृत में विवृत की अपेक्षा जिह्वा और मुख के उपरिभाग की दूरी अपेक्षाकृत कम होती है। जैसे - ऐ, औ आदि।

संवृत — जिह्वा और मुख विवर के उपरिभाग के बीच कम से कम दूरी रहती है जिन पर ध्वनियों का उच्चारण होता है उन्हें संवृत कहते हैं। जैसे — इ, ई, उ, ऊ आदि।

P. T. O

Scanned with CamScanner

अर्ध संवृत — जब संवृत की अपेक्षा जिह्वा और मुख-विवर के उपरिभाग की दूर अधिक रहती है तो अर्ध-संवृत ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। जैसे — ए, ओ।

जिह्वा के उत्थापित भाग के अनुसार स्वर के तीन भेद हो जाते हैं —

(1) अग्र स्वर (2) केन्द्रीय स्वर (3) पश्च स्वर।

अग्र स्वर — जिह्वा के अग्रभाग को उठाकर जिन स्वरों का उच्चारण होता है उन्हें अग्र स्वर कहते हैं। जैसे — इ, ई, ए, ऐ आदि।

केन्द्रीय स्वर — जिह्वा के मध्यवर्ती भाग को उठाकर केंद्रीय स्वर का उच्चारण होता है। जैसे — 'अ'।

पश्च स्वर — जिह्वा के पश्च भाग को उठाकर पश्च स्वर का उच्चारण किया जाता है। जैसे — आ, उ, ऊ, ओ, औ।

ओष्ठों की स्थिति के अनुसार भी स्वर के तीन भेद किए गए हैं — (1) प्रसृत (2) वर्तुल (3) अर्द्ध वर्तुल।

प्रसृत — ओष्ठों की प्रस्तुत स्थिति वह है जिसमें वे स्वाभाविक रूप से स्थित रहते हुए खुले रहते हैं। इस स्थिति को अँग्रेजी में 'फ्लैट' कहते हैं। जैसे — ई, इ, ए, ऐ का उच्चारण ओष्ठों के प्रस्तुत स्थिति के कारण ही होता है।

वर्तुल — ओष्ठों को थोड़ा आगे निकालकर जब गोलाकार कर लेते हैं तो वह वर्तुल स्थिति कहलाती है। जैसे — अ, उ, ऊ, ओ में वर्तुल स्थिति सहायक होती है।

अर्द्ध-वर्तुल — पूरा गोलाकार न होकर जब ओष्ठ आधे गोलाकार में होते हैं तो कुछ स्वरों का उच्चारण (का) जैसा होता है। जैसे — आ।

स्थान के स्थान पर व्यंजनों के निम्नलिखित भेद होते हैं — (1) कंठ्य (2) तालव्य, (3) मूर्धन्य।

आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के

Scanned with CamScanner

भेद होते हैं — (1) स्पर्श, (2) स्पर्श संघर्षी (3) संघर्षी (4) पार्श्विक (5) लोड़ित (6) उत्क्षिप्त (7) अंतस्थ — (8) अनुनासिक।

स्पर्श — स्पर्श उन ध्वनियों को कहते हैं जिनमें जिह्वा का मुख विवर के उपरिभाग का कहीं न कहीं से स्पर्श होता है। इस दृष्टि से कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग तथा तवर्ग, पवर्ग स्पर्श ध्वनियाँ हैं।

स्पर्श-संघर्षी — स्पर्श-संघर्षी ध्वनियों के उच्चारण में स्पर्श के साथ निःश्वास वायु के निर्गम में हल्का-सा संघर्षण होता है। इसलिए इन ध्वनियों को स्पर्श-संघर्षी कहते हैं। जैसे — यात्रा, ज्येष्ठ आदि।

संघर्षी — संघर्षी ध्वनियों में निःश्वास वायु के निर्गम का मार्ग जिह्वा के द्वारा अत्यन्त संकीर्ण कर दिया जाता है और वायु रगड़ खाकर बाहर बाहर निकलती है। रगड़ या संघर्ष की प्रधानता के कारण इन ध्वनियों को संघर्षी कहते हैं। जैसे — श, ह, ष आदि।

पार्श्विक — पार्श्विक ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा की नोक मुर्धा को छूती है और निःश्वास वायु दोनों पार्श्वों से बाहर निकलती है। जैसे — ल।

लोड़ित — लोड़ित ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा की नोक वर्त्स पर एक या अनेक बार ठोकर मारती है जैसे — (र) एक लोड़ित ध्वनि है।

उत्क्षिप्त — उत्क्षिप्त उन ध्वनियों को कहा जाता है जिनके उच्चारण में जिह्वा तालु के किसी भाग को झटके से मारकर हट जाती है। जैसे — ड़, ढ़ आदि।

अंतस्थ — वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में जिह्वा से न तो पूरी तरह स्पर्श होता है और न स्वरों के उच्चारणों के समान पार्थक्य ही रहता है। जिस प्रकार (य) का उच्चारण करने के लिए जिह्वा के अग्रभाग को कठोर तालु की ओर उठाते हैं पर तालु का स्पर्श नहीं —

Scanned with CamScanner

नहीं करते। इसी तरह (व) का उच्चारण करते समय दोनों ओष्ठों के पास जाते हैं पर एक दूसरे का स्पर्श नहीं करते। इसलिए (य) और (व) दोनों में स्वर और व्यंजन के वैशिष्ट्य रहने के कारण इन्हें अंतस्थ या अर्द्ध- स्वर व्यंजन कहा जाता है।

अनुनासिक - ध्वनियों के उच्चारण में ~~~~ निःश्वास वायु मुख-विवर के साथ नासिका विवर से भी निकलती है। नागरी वर्णमाला में वर्गाक्षरों के अंतिम अक्षर- ङ, ञ, ण, तथा म आदि अनुनासिक व्यंजन के उदाहरण हैं।

Scanned with CamScanner